**Regarding review of Metro station naming policy and resolving the network issue in aqua line**

**प्रो. वर्षा एकनाथ गायकवाड़ (मुम्बई उत्तर-मध्य):** सभापति महोदया, हाल ही में उद्घाटित हुई मुंबई मेट्रो की एक्वा लाइन के स्टेशनों के नामकरण को लेकर जनता में भारी गुस्सा है, वही मैं आपके सामने रखना चाहती हूँ । सिद्धिविनायक, महालक्ष्मी और छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस जैसे पवित्र और ऐतिहासिक स्थानों के नामों के आगे 'कॉर्पोरेट ब्रांड्स' का नाम जोड़ना हमारी संस्कृति का अपमान है ।

उससे भी दुखद यह है कि वर्ली के नेहरू साइंस सेंटर स्टेशन का नाम बदलकर सिर्फ साइंस सेंटर कर दिया गया, जो देश के पहले प्रधानमंत्री की विरासत को मिटाने जैसा लगता है ।

सभापति महोदया, आपके माध्यम से सरकार से मेरी यह मांग है कि क्या मंत्रालय इन स्टेशनों के नामकरण की नीति को बदलेगा ताकि ऐतिहासिक और महापुरुषों के नामों को किसी भी ब्रांड से ऊपर रखा जाए? साथ ही मेरा यह भी कहना है कि लोगों की जन भावना को देखते हुए वर्ली स्टेशन का नाम फिर से नेहरू साइंस सेंटर किया जाएगा ।

साथ में, मुझे आपको यह भी बताना है कि अंडरग्राउंड मेट्रो बन कर एक्वा लाइन 3 जब जमीन के नीचे जाती है तो पूरी तरह से मेट्रो में मोबाईल का नेटवर्क गायब हो जाता है । इस समस्या का कारण MMRC और टेलीकॉम कंपनियों के बीच पैसों का विवाद है । (व्यवधान) इस कारण से यात्रीगण यूपीआई माध्यम से टिकट खरीद भी नहीं पाते हैं ।

सभापति महोदया, जब अगर ये बुनियादी सुविधाएं ही नहीं थी, तो जल्दबाजी में इस एक्वा लाइन की ओपनिंग क्यों की गयी?